जश्न आजादी का
अंदाज अपना-अपना

मेलिसा बेल

अमेरिका में अब गर्मी पैर पसार रही है। स्कूल की छुट्टियों का समय है। दिन लंबे और गर्म, लेकिन रात को थोड़ी राहत। आसमान तारों भरा। भारत में यह आमों और मॉनसून का मौसम है तो अमेरिका में बेसबॉल तथा समुद्र तट पर घूमने का। और इससे पहले कि आप इस बारे में जानें दोनों ही जगह स्वतंत्रता दिवस का अवसर आ जाता है।

अमेरिका में इस खास दिन का मतलब होता है 4 जुलाई। कॉर्न डॉग्स, सफेद पैंटें, दोस्त, पिकनिक, आतिशबाजी, पार्टियां और किसी जार में जुगनू इकट्ठे करना। लोगों पर थोड़ी मस्ती छा जाती है। सोफिया पार्क लॉ की छात्रा हैं और न्यूयॉर्क में नौकरी भी करती हैं। वह चहकते हुए कहती हैं, ''यह दिन खाने-पीने तथा आनंद उठाने का दिन होता है। यह मौका होता है बार्बीक्यू और पिकनिक वाले व्यंजनों का स्वाद लेने का। आतिशबाजी भी होती है और देशभक्ति के गाने भी।'' सोफिया की योजना थी कि इस बार वह स्वाधीनता दिवस नानटुकेट द्वीप पर मनाए।

भारत में इस दिन का अर्थ है 15 अगस्त। लाल किले से प्रधानमंत्री का भाषण, कश्मीर संकट, पूरे दिन पतंग उड़ाने और हर जगह झंडे फहराने का दिन। दिल्ली में चाय के सिप लेते हुए शिलांगवासी 30 वर्षीय पत्रकार सम्राट चौधरी कहते हैं, ''कई लोगों के लिए तो यह लंबी तानकर सोने का दिन होता है।'' भारत और अमेरिका, दोनों के लिए ही स्वाधीनता दिवस की खास अहमियत है- ब्रिटिश शासन से आजादी। दोनों ही औपनिवेशिक शासन से मुक्ति का प्रतीक हैं। दोनों ही आजादी की शुरुआत का प्रतीक हैं। तो फिर जश्न मनाने के तरीके इतने अलग-अलग क्यों? इस सवाल का जवाब तलाशने के लिए हमें एक नजर इतिहास पर डालनी होगी।

भारत में 15 अगस्त 1947 की मध्य रात्रि को प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू ने एक नए देश के गठन और ब्रिटिश सत्ता के अंत का स्वागत किया। लेकिन यह आजादी देश का विभाजन भी साथ लेकर आई। लाखों लोगों को अपनी जन्मभूमि छोड़नी पड़ी, अपनों से बिछड़ना पड़ा।

25 साल की नयनतारा किलाचंद अमेरिका में पढ़ती हैं। छुट्टियों के दौरान मुंबई में अपने घर पर बातचीत में वह कहती हैं, ''आजादी हमारे लिए खुशी और गम एक साथ लेकर आई। हिंदू-मुस्लिम अचानक एक-दूसरे के खून के प्यासे बन गए। हजारों जानें गईं। और तो और देश से जाते-जाते भी अंग्रेज अरबों डॉलर की राशि साथ ले जाने में कामयाब रहे।''

दूसरी ओर, अमेरिका को हालांकि खूनी संघर्ष के बाद आजादी मिली लेकिन यह किसी लड़ाई के अंत जैसा नहीं था। 4 जुलाई 1776 को अमेरिका में 13 उपनिवेशों ने एकमत से फैसला लिया कि उनके द्वारा छेड़ी गई लड़ाई पूर्ण आजादी के लिए है, न कि ब्रिटिश सम्राट और संसद से कुछ सुविधाएं और बेहतर बर्ताव पाने की। 4 जुलाई को ही उस ऐतिहासिक स्वतंत्रता की घोषणा के दस्तावेज को लिखे जाने का भी जश्न मनाया जाता है, जिसने पूरे 120 साल तक विभिन्न देशों के स्वतंत्रता सेनानियों को प्रेरित किया।

जॉन एडम्स जैसे देशभक्तों - जो बाद में अमेरिका के दूसरे राष्ट्रपति बने- के लिए तो इस दिन की खास अहमियत थी। वह इसे जश्न के दिन के रूप में देखते थे : नागरिकों के दिमाग में अपने राष्ट्र के जन्मदिन की तरह। जॉर्ज वॉशिंगटन वह जनरल थे जो अमेरिका के पहले राष्ट्रपति बने। उन्होंने अपने जवानों को ज्यादा राशन बांटकर आजादी का उत्सव मनाया। उस दिन अमेरिका की पहली राजधानी फिलाडेल्फिया में बहुत बड़े बोनफायर का आयोजन किया गया।

उधर, भारत सरकार ने स्वतंत्रता दिवस मनाने का ज्यादा औपचारिक तरीका अपनाया। लालकिले के प्राचीर से प्रधानमंत्री देश को संबोधित करते हैं, इंडिया गेट पर सेना का मार्च पास्ट होता है और लोग

स्टीव कैनन © ए.पी.-डब्ल्यू. डब्ल्यू. पी.

एड बेल्ल © ए.पी.-डब्ल्यू. डब्ल्यू. पी.

दिन में पतंगें उड़ाते हैं। भारत में इस दिन कोई हंगामेदार आयोजन नहीं होता, क्योंकि कई लोग यह मानते हैं कि यह दिन यह विचारने का दिन है कि हमने क्या खोया।

27 साल की नयनिमा बसु रिपोर्टर हैं। वह कहती हैं, ''आजादी के साथ हमें एक विभाजित मुल्क मिला, इतिहास का एक महत्वपूर्ण टुकड़ा हमसे छीन लिया गया, हमने अपनी बेहद समृद्ध संस्कृति को खो दिया..।'' नयनिमा को भारत के अलावा अमेरिका के आजादी के जश्न से रूबरू होने का मौका मिला है। जीई इंटरनेशनल में ट्रेनिंग के दौरान वह वहां स्वाधीनता दिवस पर वर्जीनिया में थीं।

शुरू के करीब 70 सालों में अमेरिका में स्वाधीनता दिवस पर कोई तड़क-भड़क का माहौल नहीं हुआ करता था। थोड़ी-बहुत आतिशबाजी हुआ करती थी, चर्चों में घंटियां बजाई जाती थीं, स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान पर भाषण हुआ करते थे और वीर शहीदों की याद में शोक गीत गाए जाते थे। *अर्ली अमेरिकन होम्स* पत्रिका के लेखक मैरियन आई. डोयल बताते हैं कि वर्ष 1850 से स्वतंत्रता दिवस मनाए जाने का अंदाज बदल गया है। अब आजादी की उस लंबी लड़ाई के शहीदों और स्वतंत्रता सेनानियों को कम याद किया जाता है और हुड़दंग ज्यादा मचाया जाता है। आजादी के जश्न पर सर्कसनुमा कार्यक्रमों, होहल्ले और दुकानदारों का कब्जा हो गया है।

इसलिए आजादी के 230 साल बाद यह ताज्जुब की बात नहीं कि कई अमेरिकी स्वाधीनता दिवस को दोस्तों के साथ मजे करने और मौसम का लुत्फ उठाने के एक मौके से ज्यादा कुछ नहीं समझते। कैटी स्टेफर्ड 28 साल की हैं और इलिनोइस की नॉर्थ-वेस्टर्न यूनिवर्सिटी में पढ़ती हैं। हंसते हुए वह कहती हैं कि यह दिन अब एक बड़ी पार्टी का आनंद उठाने का बहाना भर होता है। इस 4 जुलाई को उसने वर्जीनिया में अपने बॉयफ्रेंड के साथ आजादी का जश्न मनाने की योजना बनाई थी। कैटी के मुताबिक, ''हम एक अच्छी थीम पार्टी पसंद करते हैं- किसी खुशनुमा जगह पर सभी दोस्त लाल, नीले, सफेद रंग के परिधान में आएं और शानदार आतिशबाजी हो...।''

भारत में भी स्वतंत्रता दिवस के दिन राष्ट्रीय अवकाश होता है, पर यहां लोग इसे एक आम छुट्टी की तरह आराम करने के अंदाज में बिताते हैं। चौधरी पूर्वोत्तर भारत में पले-बढ़े हैं। वह कहते हैं कि कई लोग 15 अगस्त को सुरक्षा कारणों से भी घर से बाहर नहीं निकलते। ''आतंकवादी आमतौर पर महत्वपूर्ण राष्ट्रीय दिवसों पर हमला करना चाहते हैं और इस लिहाज से स्वाधीनता दिवस सबसे बड़ा दिन होता है।'' अवकाश के चलते पूरा शहर ही बंद रहता है। शिलांग के अपने दिनों को याद करते हुए वह बताते हैं कि एक बार 15 अगस्त के दिन वह सुबह करीब 11 बजे बाजार में निकल गए। बाजार में उनके अलावा चार किलोमीटर तक और कोई नहीं था। ऐसे देश में यह आश्चर्यजनक है जहां बाजारों में हर वक्त भारी भीड़ रहती हो, जहां बाजार में एक-दूसरे से टकराए बिना आप आगे नहीं बढ़ सकते।

शॉन ताओ रोड आइलैंड के ब्रिस्टल में रहते हैं। वहां की टाउन काउंसिल का कहना है कि वे सबसे पहले से, यानी 1788 से स्वाधीनता दिवस की पार्टी का आयोजन करते आ रहे हैं। ताओ के मुताबिक इस दिन पूरा कस्बा लाल, सफेद और नीले रंगों में सज जाता है और परेड तथा आतिशबाजी की तैयारियां तो कई दिन पहले से शुरू हो जाती हैं। लोगों पर एक जुनून सा सवार रहता है।

भारतीयों पर अभी आजादी के उत्सव का जुनून छाना बाकी है। कुछ लोगों का मानना है कि आजादी के उत्सव के साथ यह याद रखना जरूरी है कि गुलामी से मुक्ति पाने के लिए हमारी पिछली पीढ़ी ने कितनी कुर्बानियां दी थीं। नयनिमा नई पीढ़ी के 'बंटी और बबली' वाले रुख से क्षुब्ध हैं। कहती हैं कि ये लोग आजादी की कीमत नहीं समझते।

कोलकाता के 25 वर्षीय फिल्म निर्माता अश्विनी शर्मा कहते हैं कि स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान को तो नहीं भुलाया गया है लेकिन आजादी पाने की खुशी भूल गए हैं। ''मैं चाहता हूं कि 15 अगस्त को भारतीय पूरे दिन डांस मैराथन में हिस्सा लें। या कुछ ऐसा किया जाए जो 59 साल पूर्व आजादी पाने के उल्लास को व्यक्त कर सके। आजादी के लिए लड़ने का अहसास, वह यात्रा भुला दी गई है। इसे महसूस करने के कई तरीके हैं।'' □

***मेलिसा बेल** ने हाल ही में नई दिल्ली में संडे हिंदुस्तान टाइम्स में अपनी इंटर्नशिप पूरी की है। अब वह सैन डिएगो, कैलिफोर्निया से स्वतंत्र पत्रकार के रूप में काम कर रही हैं।*

बाएं से: सेंट जॉर्ज द्वीप, फ्लोरिडा के समुद्रतट पर स्वतंत्रता दिवस की छुट्टी का आनंद उठाते हुए अटलांटा, जॉर्जिया के जोई मैक्लैमोरी और उनकी पत्नी कैरेन।

न्यूयॉर्क में 4 जुलाई 2005 को ब्रुकलिन ब्रिज के निकट आतिशबाजी का प्रदर्शन।

बेंगलूर में वर्ष 2005 में राष्ट्रीय पतंग उत्सव के दौरान राष्ट्रीय झंडे के रंगों का खुलकर प्रदर्शन हुआ।

15 अगस्त 1997 को भारत की स्वतंत्रता के 50 साल पूरे होने के मौके पर नई दिल्ली के इंडिया गेट पर आतिशबाजी का प्रदर्शन देखते लोग।

गौतम सिंह © पी.ए.पी.-डब्ल्यू.पी.

जॉन मैर © पी.ए.पी.-डब्ल्यू.पी.